पदार्थविज्ञान एवं परमाणुवाद

डॉ. रामदेव साहू
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (वेदविज्ञान)
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर (राज.)

भारतीय दार्शनिकचिन्तन परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण पहलू विज्ञान भी रहा है अथवा यों भी कह सकते हैं कि अनेक वैज्ञानिक विषयों का चिन्तन भारतीय दर्शनवाङ्मय का केन्द्रीभूत तत्त्व रहा है। इस चिन्तन का सर्वाधिक सम्बन्ध पदार्थविज्ञान से स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि आधुनिक युग में विज्ञान से सजीव निर्जीव पदार्थों के तात्त्विक अध्ययन का ही तात्पर्य ग्रहण किया जाता है। भारतीय दर्शन आत्मविज्ञान के साथ साथ जिस अनात्मविज्ञान की पृष्ठभूमि को उपस्थापित करता है, वह मूलतः पदार्थवादी चिन्तनधारा का ही प्रवर्त्तन करती है। इस दार्शनिक पदार्थवादी चिन्तन का मूल आधार वेद ही है, अतः यह कहना अधिक उचित होगा कि वैदिक पदार्थवाद का ही पल्लवन भारतीय दर्शन में विशेष रूप से न्याय एवं वैशेषिक के अन्तर्गत सम्भव हुआ है।

वैदिक पदार्थवाद की पृष्ठभूमि पूर्णतया विज्ञानसम्मत रही है। उदाहरण के लिये आधुनिक वैज्ञानिकों ने परमाणु के संघटक पदार्थों में 'ईथर' नामक पदार्थ को स्वीकार किया है, जो घर्षण से रहित होता है तथा इसका प्रयोजन प्रकाश का प्रणयन कहा गया है, जिससे पदार्थ की आकृति में अन्यतर वैशिष्ट्य दिखलायी पड़ता है। वेद में भी प्रकाश का प्रणयन करने वाला तथा पदार्थ के परमाणुओं में स्थाई रूप से विद्यमान 'तेजन' नामक पदार्थ स्वीकार किया गया है, किन्तु वह घर्षण से रहित नहीं होता, जैसा कि अथर्ववेद में उल्लेख हुआ हैः-

''यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजनम्''

इस मन्त्रांश से ज्ञात होता है कि तेजन एक ऐसा पदार्थ है, जो अन्तरिक्ष में सर्वत्र व्याप्त है। वह द्युलोक में पृथ्वीलोक में भी विद्यमान है। इसका कार्य प्रकाश का प्रणयन ही है। ऋग्वेद में इसका अपरनाम मातरिश्वा है-'मातरि अन्तरिक्षे श्वसिति इति मातरिश्वा' अर्थात् अन्तरिक्ष में गति को आयाम प्रदान करने वाला मातरिश्वा या तेजन द्रव्य ही सजीव-निर्जीव पदार्थों के परमाणुओं के मध्य विद्यमान रह कर उन्हें संघटित बनाये रखता है। इसे सूक्ष्म वायु कहा जा सकता है। वैदिक ऋषि घर्षण के अभाव में शब्दाभाव को स्वीकार करता है, अतः घर्षणरहित होने पर पत्थर इत्यादि द्रव्यों में टूटने पर, टकराने पर या प्रहार करने पर शब्द (ध्वनि) नहीं हो सकेगा। ऐसी स्थिति में इसमें घर्षण स्वीकार करना ही पड़ेगा। सजीवों में भी स्पन्द एवं संवेदना का कारक यही सूक्ष्म वायु है। इस प्रकार परमाणु का निर्जीव द्रव्योत्पत्ति में ही नहीं, अपितु सजीव द्रव्योत्पत्ति में भी कारणत्व अपरिहार्य रूप से सिद्ध होता है, जिसे नकारा

नहीं जा सकता।

जगत् की व्यावहारिक सत्ता जिसे स्वरूपतः सजीव एवं निर्जीव पदार्थों की समष्टि के रूप में देखा जाता है, का विश्लेषण विज्ञान एवं दर्शन दोनों का क्षेत्रिय लक्ष्य रहा है। दार्शनिकों का मानना है, कि पारमार्थिक सत्ता के बोध से पूर्व व्यावहारिक सत्ता का बोध अनिवार्य है। यह व्यावहारिक सत्ता हमें यह सोचने को बाध्य कर देती है, कि इसका मूल कारण क्या है? जगदुत्पत्ति के संदर्भ में निमित्त एवं उपादान दो कारण स्वीकार किये गये हैं। निमित्त कारण ईश्वर तथा उपादान कारण परमाणु हैं।

दार्शनिकों की तार्किक विचार-सरणि में जगदुत्पत्ति के सन्दर्भ में तीन सिद्धान्त मूलतः प्रवृत्त हुए हैंः- 1. आरम्भवाद, 2. विवर्त्तवाद एवं 3. परिणामवाद

आरम्भवाद के अनुसार पृथ्वी आदि के परमाणु से द्रव्यगुण आदि का आरम्भ होता है, जिससे श्रृंखलाभूत कार्य के रूप में द्रव्यों उत्पत्ति होती है।

विवर्त्तवाद के अनुसार परमार्थतः एक मात्र अद्वितीय ब्रह्म निर्गुण अनादि एवं अनिर्वचनीय होने पर भी अविद्या (माया) के सम्बन्ध से जगद्रूप विवर्त्त को आविर्भूत करता है, अतः अविद्या या माया ही जदगुत्पत्ति का उपादान कारण है। यहाँ निमित्त एवं उपादान में भेदाभेद है, जैसे जल से उत्पन्न लहर उससे पृथक् न होते हुए भी स्वरूपतः पृथक् प्रतीयमान होती है, वैसे ही अविद्या से उत्पन्न यह जगत् उससे पृथक् न होते हुए भी स्वरूपतः पृथक् प्रतीयमान होता है। इससे स्पष्ट होता है, कि द्रव्य जो उत्पन्न हुआ है वह विवर्त्त है। उसमें स्वरूपान्तर की प्रतीति ही भ्रम को उत्पन्न करती है।

परिणामवाद के अनुसार एक द्रव्य किसी दूसरे द्रव्य से अवस्थापरिणाम के रूप में आविर्भूत होता है। इस प्रकार सांसारिक द्रव्योत्पत्ति की श्रृंखला निर्जीवों एवं सजीवों में निरन्तर चलती रहती है, बीज से वृक्ष तथा वृक्ष से बीज की भाँति। परिणाम के दो प्रकार माने गये हैंः- विकृत परिणाम एवं अविकृत परिणाम। दूध का दही के रूप में परिवर्तित हो जाना विकृत परिणाम है, किन्तु स्वर्ण का आभूषण के रूप में परिवर्तित होना अविकृत परिणाम है। अविकृत परिणाम सदैव कारण रूप में ही रहता है, किन्तु विकृत परिणाम में कारणरूपता नष्ट हो जाती है।

दृश्यमान जगत् की भी कारणरूपता नहीं दिखायी देती, अतः यह भी विकृत परिणाम ही है, जो ब्रह्म का विकृत परिणाम कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में ब्रह्म नामक अदृश्य शक्ति या तत्त्वविशेष का विकृत परिणाम ही परमाणु है, जो आनन्त्य को प्राप्त हो कर साधर्म्य एवं वैधर्म्य की संप्राप्ति के अनन्तर परस्पर संघटन की क्रिया से द्रव्य को उत्पन्न करता है।